Raj Express (Indore), 21st January 2025, Page- 04

आईआईटी इंदौर और आईआईटी गांधीनगर के संयुक्त नेतृत्व में चल रही परियोजना

नर्मदा नदी का पुनर्जीवन और मानवीय गतिविधियों से प्रभावित इसकी पारिस्थितिक स्थिति बनाना है सुदृढ़

जल शक्ति मंत्रालय की ओर से शुरू किया गया नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर के नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सी-नर्मदा) की ओर से नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन के एकीकृत दृष्टिकोण पर दो दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। जल शक्ति मंत्रालय की ओर से शुरू किया गया नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सी-नर्मदा), नर्मदा नदी क्षेत्र के लिए स्थिति आंकलन व प्रबंधन योजना (सीएएमपी) पर अध्ययन कर रहा है। आईआईटी इंदौर और आईआईटी गांधीनगर के संयुक्त नेतृत्व व आईआईटी कानपुर में सी-गंगा की निगरानी में चल रही इस परियोजना का उद्देश्य नर्मदा नदी का पुनर्जीवन करना और मानवीय गतिविधियों से प्रभावित इसके पारिस्थितिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना है। यह पांच प्रमुख स्तंभों : प्रदूषण रहित नदी प्रवाह (निर्मल धारा), अविरल नदी प्रवाह (अविरल धारा), समन्वित संरक्षण विकास, लोगों को नदी विज्ञान से अवगत कराना और प्रबंधन पर केंद्रित है। कार्यशाला में मध्यप्रदेश के विभिन्न संगठनों से कुल 48 प्रतिभागी शामिल हुए। इस दौरान नर्मदा नदी के विभिन्न पहलुओं पर सात मुख्य व्याख्यान और कई पैनल चर्चाएं शामिल थीं।

नदी के दोनों किनारों पर पेड़ लगाने की आवश्यकता

कार्यशाला में मिट्टी के कटाव को रोकने, जलाशयों में गाद को नियंत्रित करने और जल गुणवत्ता की रक्षा के लिए नदी के दोनों किनारों पर पेड़ लगाने की आवश्यकता पर बात की। एकीकृत नदी क्षेत्र प्रबंधन में जैव विविधता और पारिस्थितिक समस्याओं, कटाव और अवसादन में नदी आकृति विज्ञान की भूमिका पर चर्चा की गई और कटाव दरों को मापने के लिए अनुभवजन्य मॉडल का वर्णन किया। इसमें हिमालयी नदियों के केस अध्ययनों का उपयोग करते हुए नदी घाटियों में अवसादन की समस्याओं पर भी गहनता से विचार किया गया। अवसादन के प्रमुख कारणों, नमूनाकरण तकनीकों और राहत संबंधी रणनीतियों पर बात की। आशीष दत्ता, सदस्य-पावर, एनसीए ने नदी के महत्व और सतत् प्रबंधन में शैक्षणिक भागीदारी के महत्व पर बात की। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने नर्मदा नदी प्रबंधन परियोजनाओं में विभिन्न विभागों के छात्रों और संकाय सदस्यों को शामिल करने के महत्व पर जोर दिया और भागीदारी व सहयोग बढ़ाने के लिए एक मॉडल विकसित करने का सुझाव दिया।

अविरल व निर्मल धारा को प्राप्त करने पर जोर

सी-नर्मदा के संयोजक प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल ने कार्यशाला के उद्देश्यों को बताया, जिसमें नदी क्षेत्र प्रबंधन में सहयोग को बढ़ावा देने और उन्नत उपकरणों का लाभ उठाने के उद्देश्य शामिल थे। उन्होंने बहुआयामी दृष्टिकोण और सहयोग के माध्यम से अविरल व निर्मल धारा को प्राप्त करने पर जोर दिया। प्रोफेसर विनोद तारे ने नदियों को जीवित पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में प्रबंध करने, मानवीय आवश्यकताओं को पारिस्थितिकी संरक्षण के साथ संतुलित करने वाले समग्र प्रबंधन प्रथाओं पर समर्थन करने, विकेन्द्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार, वर्षा जल संचयन और चक्रीय जल अर्थव्यवस्था की आवश्यकता जैसे विषयों पर बात की।